वेब सीरीज : सिनेमा का उभरता माध्यम एक शोध अध्ययन

Web Series : A research study of the emerging medium of cinema

लघु शोध प्रबंध

एम॰फिल॰, सत्र : 2016 -17

शोध निर्देशक

डॉ. सतीश पावड़े

प्रस्तुतकर्ता

विक्रम कुमार सिंह

प्रदर्शनकारी कला (फिल्म एवं नाटक) विभाग

(साहित्य विद्यापीठ)

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि विक्रम कुमार सिंह ने डॉ. सतीश पावड़े के मार्गदर्शन में **"वेब सीरीज: सिनेमा का उभरता माध्यम एक शोध अध्ययन"** विषय पर अपना एम.फिल. शोध कार्य पूरा किया है| यह लघु शोध प्रबंध साहित्य विद्यापीठ के प्रदर्शनकारी कला विभाग के एम. फिल. सत्र 2016-17के लिए जमा किया गया है|

में इस शोध कार्य को मूल्यांकन हेतु सहर्ष अग्रसारित करता हूँ|

प्रो. ओमप्रकाश भारती

(विभागाध्यक्ष)

प्रदर्शनकारी कला (फ़िल्म एवं नाटक)

भूमिका

वैश्विक परिवेश में इंटरनेट का विकास जीवन से जुड़े सभी क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रांति लाया है मनोरंजन या प्रदर्शन का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। इस क्षेत्र में हर जगह हम इसके हस्तक्षेप को आसानी से देख सकते हैं। सिनेमा का क्षेत्र तो लगभग इस पर आश्रित सा हो गया है। इंटरनेट वस्तुतः तकनीकी माध्यम का संजाल है जो वास्तविक दुनिया के समांतर एक आभासी दुनिया को रचता है। इस आभासी दुनिया में वास्तविक दुनिया की अपेक्षा अंकुश व अनुशासन का जोर कम चलता है। जिससे इसका अच्छा या बुरा प्रयोग उपयोगकर्ता के हाथ में होता है। इस आभासी दुनिया में हमे ऐसे प्लेटफार्म मिलते हैं जहाँ हम निर्द्वंद होकर वह कर सकते हैं, जो सोचते हैं। इंटरनेट के इसी खासियत का प्रयोग वेब सीरीज के प्रदर्शन के लिए किया जाता है। वेब सीरीज वैसे विडियो की एक श्रृंखला होती है जो पटकथा या बिना पटकथा के बनती है। लेकिन उसे एपिसोडिक रूप में इंटरनेट पर जारी किया जाता है। इस तरह यह सिनेमा प्रस्तुति का एक वेब माध्यम है जिसकी शुरुआत 1990 के दशक के उत्तरार्ध में हुई और 2000 के दशक तक आते – आते लोकप्रिय हो गया। वेब सीरीज के माध्यम से आज हर तरह की कहानियों को रचनात्मक व विश्वसनीय तरीके से दिखाया जाने लगा है। मूलतः श्रृंखलाबद्ध रूप में प्रदर्शित कहानियों में जीवन की संगतियों और विसंगतियों को बिलकुल यथार्थवादी तरीके से दिखाया जाता है, क्योंकि इसे सेंसर का भय नहीं होता। पश्चिम में 1995 में शुरू हुआ वेब सीरीज निर्माण का सफ़र लगभग 23 साल बाद भारत पहुंचा और 2014 में पहली भारतीय वेब सीरीज का निर्माण हुआ। तीन सालों में ही अनेकों उल्लेखनीय वेब सीरीज का निर्माण हो चुका है। आज कई फ़िल्मकार भी इसका निर्माण कर रहें हैं क्योंकि कहीं-न-कहीं यह उन्हें वह सब कहने की सुविधा व स्वच्छन्दता देता है जो अपेक्षाकृत विशाल व सुसंगठित फिल्म माध्यम नहीं दे पता है। वित्त के आभाव से प्रभावित फिल्मकारों के लिए यह वरदान के तरह ही है। अपने स्वरुप में सिनेमा व धारावाहिक से साम्य रखने वाला यह माध्यम इतना लोकप्रिय हो चुका है कि इसके अध्ययन की जरुरत महसूस होना स्वाभाविक है। यही ज़रूरत और वेब सीरीज की स्वरुपगत विशिष्टताओं ने मुझे इस विषय को शोध हेतु चुनने के लिए प्रेरित किया।

आज विश्वभर में जितने वेब सीरीज का निर्माण हो चुका है सबका अध्ययन एक साथ में असंभव प्रतीत होता है। शोध की अवधि व संभावित व्यय के मद्देनजर भारतीय परिदृश्य में भी सभी वेब सीरीज का अध्ययन असंभव हीं था अतः शोध कार्य को सीमित करते हुए उन वेब सीरीजों पर विचार किया गया जो अति लोकप्रिय है।

प्रस्तुत शोध कार्य में अवलोकन , साक्षत्कार और प्रश्नावली विधि से प्राप्त आकड़ों को अंतर्वस्तु विश्लेषण विधि से विश्लेषित करके परिणाम प्राप्त किया गया है। इस कार्य में साहित्य अवलोकन भी बहुत सहयोगी नहीं हुआ क्योंकि वेब सीरीज पर छोटे-छोटे लेखों के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार का साहित्य उपलब्ध नहीं है। अतः हिंदी भाषा में वेब सीरीज पर मेरा यह कार्य संभवतः प्रथम ही है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को चार अध्यायोंमें विभाजित किया गया है।

पहला अध्याय : इस अध्य्याय का नाम वेब सीरीज का इतिहास एवं परिचय है। इसमें वेब सीरीज की पृष्ठभूमि तथा भारतीय वेब सीरीज के वर्तमान स्वरुप की जानकारी दी गई है।

दूसरा अध्याय : वेब सीरीज प्रदर्शन नाम से उल्लेखित है। इस अध्य्याय में स्वभावतः ही वेब सीरीज प्रदर्शन के स्वरुप और परिवेश की चर्चा की गई है।

तीसरा अध्याय : वेब सीरीज एवं फ़िल्म प्रदर्शन का तुलनात्मक अध्ययन नामक इस अध्य्याय में वेब सीरीज की तुलना फ़िल्म से दर्शक, बजट, और आय के श्रोत के आधार पर की गई है।

चौथा अध्याय : वेब सीरीज का भविष्य नाम से उल्लेखित इस अध्याय में वेब सीरीज के वर्तमान स्तिथियों के आधार पर भविष्य के रुझानो को समझने का प्रयास किया गया है।

उपरोक्त अध्यायों के अतरिक्त प्रबंध में उपसंहार, सन्दर्भ, और परिशिष्ट भी संकलित है। उपसंहार में शोध कार्य का परिणाम संक्षिप्त में वर्णित है। सन्दर्भ में शोध कार्य में सहयोगी सामग्री जहाँ-जहाँ से प्राप्त हुई है, उन श्रोतों की जानकारी मानक रूप में दी गई है। परिशिष्ट में वे सामग्रियां संकलित है जिनका प्रयोग शोध कार्य में सहायक हुआ है, लेकिन उन्हें सीधे उल्लेखित नहीं किया जा सकता था पर वो सामग्रियां शोध कार्य की मौलिकता का सत्यापन के लिए आवश्यक है।

इस विषय पर पूर्व शोध की अनुपलब्धता केचलते यह शोध कार्य मेरे लिए अत्यंत श्रमसाध्य रहा, पर विषय की नवीनता, रोचकता, और ज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कदम बढ़ाने की आकांक्षा ने मेरा धेर्य व उत्साह बनाये रखा। मुझे विश्वास है की प्रदर्शन का क्षेत्र, खासकर सिनेमा से जुड़े लोगों के अतिरिक्त सामान्य अध्येता के लिए भी यह शोध कार्य उपयोगी सिद्ध होगा।

—शोधकर्ता

प्रथम अध्याय

वेब सीरीज का इतिहास एवं परिचय

1.1 वेब सीरीज़ क्या है ?

पटकथा या बिना पटकथा वाले वीडियो की एक शृंखला को वेब सीरीज कहते हैं। यह आमतौर पर एपीसोडिक रूप में इंटरनेट पर जारी किया जाता है। यह एक वेब माध्यम है जो 1990 के दशक के उत्तरार्ध में पहली बार शुरू हुआ था, और 2000 के दशक में अधिक प्रमुख बन गया। वेब सीरीज के एक शृंखला को 'एपिसोड' या 'वेबीसोड'भी कहते हैं परंतु अब 'वेबीसोड' ज्यादा प्रयोग में नहीं आता है। [1]

वेब सीरीज की पृष्ठभूमि

जब हम वेब सीरीज के इतिहास पर विचार करते हैं तो हमारी दृष्टि पीछे जाकर इंटरनेट और सिनेमा पर टिकती है क्योंकि वेब सीरीज इन्ही दोनों के संयोग से संभव होता है। आज विज्ञान और तकनीक की रफ्तार इतनी तेज हो गई है कि नित्य नए अविष्कार ने मानव जीवन को अपनी चपेट में ले लिया है, या यूं कहें तो हम इन पर आश्रित होते जा रहें है। सुबह उठने के लिए घड़ी के अलार्म से लेकर भोजन के लिए माइक्रोवेब तो मनोरंजन के लिए गेम, सिनेमा या इंटरनेट पर उपलब्ध अन्य सामग्री, हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। आज के इस आभासी संसार ने हमारी वास्तविक दुनिया को पीछे छोड़ दिया है। करेंसी की जगह क्रिप्टो करेंसी ने ले ली है जिसे हम छू तक नहीं सकते। यह इस तकनीक का ही देन है कि जहाँ मानवीय संवेदना भ्रमित नजर आ रही है वहीं अपने रिश्ते की तलाश भी हम उस संसार में कर रहे हैं जहाँ उसके सत्यता का प्रमाण तक नहीं है। दामपत्य जीवन के लिए गुडिओं का सहारा ले रहे हैं। ऐसे में मानव जीवन में मनोरंजन का अपना महत्वपूर्ण स्थान है और उसके लिए भी हम आभासी दुनिया का सहारा लेते हैं जो कि आज इंटरनेट के मध्यम से खड़ी की गई है।

---

[1] https://en.wikipedia.org/wiki/Web_series

इंटरनेट

इसे इंटरनेट नेटवर्क भी कहते है। यह एक ऐसा महाजाल है जो कि दुनिया का सबसे बड़ा और व्यस्त

नेटवर्क है। यह दुनियाभर के कंप्यूटरों को वेब सर्वर और राउटर के मध्यम से आपस में जोड़ कर रखता है। राउटर वह उपकरण है जो एक कंप्यूटर से दूसरे कंप्यूटर को टी.सी.पी./आई.पी.के. जरिये कोई भी सूचना आदान-प्रदान करता है। ये जाल एक तरह का वायर है जिसमें सूचना और डाटा दुनिया भर में घुमता रहता है। ये डाटा टेक्स्ट, इमेज, ऑडियो, विडियो कुछ भी हो सकता है।

इंटरनेट की शुरुआत सबसे पहले 1970 में विंटोन ग्रे कर्फ (Vinton Gray Cerf) और बॉव कान्ह (Bob Kahn) के द्वारा किया गया था। इन्हें इंटरनेट का जनक भी कहा जाता है।[2] सबसे पहले इसका उपयोग डिपार्टमेंट ऑफ़ डिफेन्स (डी.ओ.डी.) सैन्य संबंद्धित कार्यों के लिए किया गया लेकिन 1980 में एडवांस रिसर्च प्रोजेक्ट इन एजेंसी (ए.आर.पी.एन.) द्वारा इस नेटवर्क को सरकारी और कुछ बड़ी निजी संस्थाओं के लिए सार्वजनिक किया गया। 1990 में टिमोथी जॉन बर्नर्स-ली (Timothy john Berners-Lee) ने वर्ल्ड वाईड वेब (डब्लू.डब्लू.डब्लू.) जिसे की डब्लू थ्री भी कहते है जो की एक यूनिफार्म रिसोर्स लोकेटर (यू.आर.एल.) है, का अविष्कार किया जिसको की पूरी दुनिया में उपयोग किया जाने लगा।

14 अगस्त 1995 को (वी.एस.एन.एल.) विदेशी संचार निगम लिमिटेड द्वारा इसे भारत की जनता के लिए सार्वजनिक कर दिया गया।

इंटरनेट की क्रियाविधि :

[2] https://hindish.com/what-is-internet/

जब हम कोई भी सूचना इंटरनेट पर सर्च करते हैं तो हमारा कंप्यूटर, मोबाइल, लैपटॉप इत्यादि हमें इंटरनेट मुहैया करने वाली कंपनी के सर्वर से जुड़ जाता है। जिसे हम इंटरनेट सर्विस प्रोवाइडर (आई.एस.पी.) कहते है। जब आई.एस.पी. को हमारे ब्राउज़र (गूगल क्रोम, फायरफॉक्स इत्यादि) से जो भी रिक्वेस्ट मिलती है वह सर्वर राउटर की मदद से उस सूचना को हम तक पहुंचा देती है। आई.एस.पी. के सर्वर से काफी ब्राउजर जुड़े होते है। यदि हमें इंटरनेट मुहैया करने वाली कंपनी के आई.एस.पी. के पास वह सूचना नहीं होती है तो वह सर्वर आस-पास के अन्य सर्वरों से जुड़ जाता है और फिर वहां से सूचना एकत्रित होकर हम तक पहुंचती है।

सिनेमा

जिसे हम फिल्म, चलचित्र अथवा सिनेमा कहते हैं। इसके मूल में जो एक महत्वपूर्ण चीज

दिखाई देती है वह यह है कि इसमें छवियों को इस तरह से एक के बाद एक प्रदर्शित किया जाता है, जिससे हमें गति का आभास होता है, और कहें तो ये गति का आभास भी एक तरह से छलावा है क्योंकि अंतत: वह जो हम अपनी इन नंगी आँखों से देख रहे हैं उसकी कमजोरी या बहादुरी है। क्योंकि विज्ञान कहता है कि आँख की रेटिना किसी भी दृश्य की छवि को सेकेण्ड के दसवें हिस्से तक अंकित कर सकती है। और तकनीक इसी का फायदा उठता है जिससे की छवि घुमती हुई नजर आती है। सिनेमा बहुत पुराना अविष्कार नहीं है। जब लुमियर बंधू ने पेरिस में अपना नया मशीन दिखाया वो 28 दिसंबर 1895 का दिन था। इसका पहला

शो ग्रैंड होटल के 'इन्डियन रूम' में किया गया। इसे देखकर पूरी दुनिया में हलचल मच गई, हर कोई इसे देखना चाहता था। इसी क्रम में 7 जून 1896 को आस्ट्रेलिया जाते हुए लुमियर बंधू के सहयोगी ने मुंबई में रुक कर पहली बार इसका शो किया। इस तरह सिनेमा शुरू हो चुका था और लोगों का आकर्षण बढ़ रहा था। पश्चिम के देशों में इसी आधार पर सिनेमा का सौ साल 1995 को मनाया गया था। लेकिन भारत में इसका श्रेय दादा साहब फाल्के की फ़िल्म 'राजा हरिश्चंद्र' को जाता है जो 1913 में बनी थी। यहीं से भारतीय सिनेमा का सफर शुरू होता है। यही वह समय था जब यूरोप के फ्रांस में रहते हुए जार्ज मेलियास सिनेमा का जादूगर बन गया। क्योंकि इन दोनों की फिल्मों से एक दूसरा विचार पैदा हुआ जो लुमियर-बंधू की फ़िल्म से अलग था।

इन दोनों की फिल्में इसलिए महत्वपूर्ण थी की क्योंकि इसकी मदद से वे अपने दर्शकों को सपने दिखा सकते थे और शायद इन्हीं कारणों से यूरोप में भी कुछ लोगों के लिए लुमियर-बंधू कैमरे के आविष्कारक थे, जबकि इसकी नींव यहीं पड़ी थी। फिल्म की शुरुआत तब हुई जब इसमें कहानी आ गई और इस तरह फिल्म का विकास एक अलग ढंग से होने लगा और इसकी यही योग्यता सबसे महत्वपूर्ण हो गई। सिनेमा को लेकर फिर लोगों में मतभेद भी दिखने लगा किसी का मानना यह है कि जीवन का यथार्थ सिनेमा में दिखाया जाना चाहिए वही कुछ लोग इसे कल्पनाओं की दुनिया के रूप में देखते है।

ऐसे में ईरान के फिल्ममेकर मोहसेन मखमाबफ़ (Mohsen Makhmabaf) का विचार ये है – "Cinema is cinema, cinema recreate itself even I believe that the YouTube is the source of cinema. Cinema… it doesn't mean old format of showing film in small face in big face. The way of thinking through of image is cinema even you can make film by mobile then you screening your film in mobile and send through of mobile to other mobile.... it is cinema. You don't need to go only to the theatre to see the film, I mean the image, the power of image, storytelling through of image, even not story telling only having different image of one concept, but with art mentality could be cinema. Cinema is the way that cineaste will go. This is not only one way that we should go. when we walk behind our leg we create the way of cinema. The way of

cinema developing itself by the walking of the film maker everywhere, this is cinema." [3]

वेब सीरीज का इतिहास :

वेब सीरीज का अध्याय जिसे एपिसोड कहा जाता है। दुनिया का पहला एपिसोड एक ऑनलाइन कहानी 'द स्पार्ट' या द स्पार्ट डॉट कॉम थी। इसे स्कर्ट जकारिन ने 1995 में बनाया था। यह पहली वेबसाइड है, जिसने फोटो वीडियो को एकीकृत किया बाद में कहानी के ब्लाग के रूप मे जाना जाने लगा। द स्पार्ट की तुलना मेलरोस प्लेस-ऑन –द- वेब (Melrose place –on-the-web) के साथ की गई थी इसने आकर्षक अभिनेताओं को कास्ट किया जो कुछ प्रचलित या हिप ट्वेंटी खेलते हैं ये लोग दक्षिण कैलिफोर्निया समुद्रतल के पास एक घर किराया पर लेते हैं जिसका नाम 'द स्पाट' है। ये सांता मोनिका कैलिफोर्निया में है। इस साइट ने इंफोसेक की 'कुल साइट ऑफ द ईयर' का खिताब अर्जित किया जो बाद में वेब बन गया। उसी वर्ष बुलसिया आर्ट (Bullsiye Art) जो की पहले वेब प्रकाशकों में से एक था ने एनिमेटेड वेबिसोड बनाया। इसकी पहली कुछ वेबिसोड में पोर्कचाप्स, इंटरनेट द एनिमेटेड सीरीज और रेट चिकन है। 1998 में इसे मिस मोफी (Miss Moffy) और द मफ मोब (The Muf Mob) के साथ एक हिट मिला था जिसने एम. टी. वी. (MTV) के साथ एक समझौता किया था। बुल्सिया आर्ट ने स्पेस डॉग (Space Dog) बनाया जिसने एटम फिल्मस (Atom Films) पे काफी लोकप्रियता हासिल की। इसके वास्तविक सामग्री को हम वर्तमान में मैजिक बटर वेब नेटवर्क (Magic Butter Web Network) पर देख सकते हैं। 1998 में ही स्टेला शॉर्ट्स (Stell Shorts) पहली बार आया था जो कि पहली कॉमेडी लाइव एक्शन वेब सीरीज है ।इसे पहले हेवी डॉट कॉम (heavy.com) और कॉमेडीनेट डॉट कॉम (comedynet.com) पर देखा गया।

2003 में माइक्रोसॉफ्ट ने एम. एस. एन. (MSN) वीडियो लॉंच किया जिसमें मूल वेब सीरीज वियर्ड टीवी 2000 Weird TV (सिंडिकेटेड टेलीविजन के रचनाकारों ने वियर्ड टीवी) को दिखाया गया था। वियर्ड टी.वी में दर्जनों शॉर्ट्स कॉमेडी स्केच और मिनी डोकुमेंटरी थी जो खासकर एमएसएन वीडियो के लिए प्रदर्शित किया 2003 से 2006 तक कई स्वतंत्र वेब सीरीज ने लोकप्रियता हासिल किया। खासकर रेड वर्सेज़ ब्लू (Red VS Blue) ने, जिसे रोस्टर टीथ (Rooster Teeth) के द्वारा बनाया गया था ।इसे

[3] https://www.youtube.com/watch?v=LFzU0c_z8So

स्वतंत्र रूप से यूट्यूब (YouTube) रेववर (Revver) और रोस्टर टिथ के वेबसाइट जैसे ऑनलाइन पोर्टल पर लॉंच किया गया। इसने 100 मिलियन से अधिक व्यू प्राप्त किये। सैम हेज़ 7 फ्रेंड्स (Sam Has 7 Friends) जो गर्मी और 2006 के पतन में भाग गया था, इसे डेटाइम एमी अवार्ड (Daytime Emmy Award) के लिए नामित किया गया था और माइकल इसेनर (Michall Eisner) के द्वारा अधिग्रहित करने पर अस्थायी रूप से इंटरनेट से हटा लिया गया था।

2008 में ब्रावो (Bravo) ने अपनी पहली साप्ताहिक वेब सीरीज 'द मैलन शो पेश किया। ये न्यूयार्क शहर के एक फैशन डिजाइनर मालन ब्रेटन की कहानी थी जो की स्वतंत्र रूप से एक सफल डिजाइयनर बनना चाहता है।

भारतीय वेब सीरीज :

भारतीय वेब सेरिज़ आज ऑनलाइन टेलीविज़न में नए कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं। इसकी शुरुआत सर्वप्रथम टोटल वायरल फीवर ने परमानेंट रूममेट्स से किया था। इंटरनेट पर लांच की जाने वाली ये सीरीज कई बॉलीवुड फिल्मो से ज्यादा प्रभावी और मनोरंजक होती है। पिचर्स से लेकर बैंड-बाजा-बारात तक यूट्यूब पर आने वाली कई वेब सीरीजटीवी के समानांतर एक नयी व्यवस्था बनाने की कोशिश में हैं,जिसमें टीवी से बेहतर धारावाहिक, ड्रामा और एक्टर मौजूद हैं। हमारे धारावाहिकों का घटिया स्तर एक राष्ट्रीय समस्या है। विकट राष्ट्रीय समस्या, जिसको सुधारने की जरूरतों पर अब अंजान कस्बों के उतने ही अंजान गली-मोहल्लों तक में चर्चा नहीं होती। भारत भर में कोई भी शख्स ये उम्मीद बचाए रखने का बोझ नहीं उठाना चाहता कि टेलीविजन के हमारे ये स्तरहीन धारावाहिक किसी खुशकिस्मत समय में स्तरीय हो पाएंगे। हिंदी के इन धारावाहिकों से सुधार की उम्मीद करना ट्विटर के ट्रोल्स से सुधरने की उम्मीद करने जैसा है। उस पर दुख यह है कि एक दूसरी राष्ट्रीय समस्या (पाकिस्तान) के यहां बनने वाले धारावाहिक इस मामले में हमें आईना दिखा रहे हैं कि देखिए जनाब, टीवी के लिए अच्छे ड्रामे ऐसे बनते हैं। बात-बेबात पाकिस्तान को लानत-मलानत भेजने वाले हम हिंदुस्तानी उस गुणवत्ता की परछाईं को भी नहीं छू पा रहे जो 'जिंदगी' चैनल पर प्रसारित होने वाले शानदार पाकिस्तानी ड्रामों की है। इन सब के बीच शर्म से भीगे इस समय में इंटरनेट और यूट्यूब मन लगाकर अपना काम कर रहे हैं। यूट्यूब के भारतीय चैनलों ने स्पूफ वीडियो से सफर शुरू कर अपने को इस काबिल बना लिया है कि वे अब शानदार धारावाहिक भी बनाने लगे हैं। द वायरल फीवर (टीवीएफ) जैसे यूट्यूब चैनल जिन्होंने स्पूफ वीडियो से शुरूआत कर पैरोडी-कॉमेडी और सटायर बनाए, अब धारावाहिकों की वेब सीरीज बना रहे

हैं। इस नयी शुरूआत की सबसे अच्छी बात यह है कि देसी लोग इन वेब श्रृंखलाओं को उसी तत्परता और उत्सुकता से देख रहे हैं जैसे विदेश से आयातित 'गेम आफ थ्रोन्स', 'ब्रेकिंग बैड' और 'हैनीबल' को देखते रहे हैं। उनके इस अभिनव प्रयोग की सफलता का नतीजा यह भी है कि अब यशराज फिल्म्स (वाईआरएफ) जैसे बड़े बैनर भी इस मैदान में कूद पड़े हैं। वाईआरएफ की यूथ विंग 'वाई फिल्म्स' की नई वेब सीरीज बैंग बाजा बारात का प्रीमियर चार नवंबर को हो चुका है। उसकी पहली वेब सीरीज मैन्सवर्ल्ड को बढ़िया प्रतिक्रिया मिली थी। वेब सिरिजों की सबसे बढ़िया बात है कि लोग इसे देख रहे हैं। एक नया दर्शक वर्ग बन रहा है जो टीवी के धारावाहिकों से उकताया हुआ बैठा था और चुपचाप अमेरीकी टीवी शोज में ही अपना 'निर्वाना' ढूंढ रहा था। अब ऐसे दर्शक वर्ग के पास 'पिचर्स' जैसे धारावाहिक हैं जो नयी धारा बनकर आने वाले वेब धारावाहिकों के लिए एक अलग रास्ता बना रहे हैं।

अवार्ड्स

2009 में पहली बार वेब सीरीज उत्सव स्थापित किया गया था। जिसे लॉस एंजिल्स वेब सीरीज फेस्टिवल कहा जाता है।[4]

1995 में वेबबी पुरस्कार स्थापित हुआ और 2009 में कॉमेडी, नाटक और रियलिटि टीवी श्रेणी में शीर्ष वेब सीरीज को इंडी सीरीज अवार्ड्स (Indie Series Awards) से पहचान मिली। 2009 में, वेब टेलीविज़न की अंतरराष्ट्रीय अकादमी की स्थापना वेब टेलीविज़न के रचनाकारों, अभिनेताओं, उत्पादकों और अधिकारियों के समुदाय को यवस्थित और समर्थन करने के लिए की गई थी। इसने 2009 और 2010 में स्ट्रीम अवार्ड्स के लिए विजेताओं का चयन (जो वेब टेलीविज़न और वेब सीरीज सामाग्री का पुरस्कार देता है।) को प्रकाशित किया। 2010 से स्ट्रीमी अवार्ड्स के कमजोर रिसेप्शन और निष्पादन के कारण आई. ए. डब्लू. टीवी. ने इस अवार्ड समारोह को रोकने का फैसला किया। आई ए डब्लू टीवी. ने अपने खुद का आई ए डब्लू टीवी. अवार्ड्स तैयार करने के बाद इसका पालन किया।

इवेंट्स एवं फ़ेस्टिवेल्स

इंडी सीरीज अवार्ड्स (Indie Series Awards):- यह वेब सीरीज के सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार समारोहों में से एक माना जाता हैं। लॉस एंजिल्स में 2010 में इसे स्थापित किया गया जो वेब टेलीविज़न के श्रेष्ठ शृंखला को पुरस्कृत करता है।

[4] https://en.wikipedia.org/wiki/Web_series

० आई. ए. डब्लू. टीवी. अवार्ड्स (IAW TV Awards):- यह अंतरराष्ट्रीय एकड़मी ऑफ वेब टेलीविजन के द्वारा संचालित किया जाता है जो 2011 मे शुरू किया गया। वेब टेलीविजन उत्पादन के उसके कला और विज्ञान को बढ़ावा देता हैं।

० न्यू मीडिया फिल्म फेस्टिवल (New Media Film Festival):- यह 2009 में शुरू किया गया जो विश्व भर में मीडिया और सिनेमा के नई तकनीक का जश्न मानता है।

० लॉस एंजेल्स वेब सीरीज फेस्टिवल (Los Angeles Web Series Festival, LA Web Fest):- यह पूरे विश्व में पहला फेस्टिवल है जो खासकर वेब सीरीज का जश्न मनाते है।

० वेनकोवर वेब सीरीज फेस्टिवल (Vancouver Web Series Festival, ARA Vancouver Web Fest):- यह कनाडा का प्रीमयर अंतरराष्ट्रीय वेब उत्सव है। यह कनाडा और पूरे विश्व के वेब सामाग्री को दिखाता है। इसकी शुरुआत 2013 में की गई।

० हॉलीवेब फ़ेस्टिवेल (HollyWeb Festival):- यह हॉलीवुड मे पहली बार हॉलीवेब डिजिटल सामाग्री का विशेष उत्सव था। यह साल के मार्च/अप्रैल के अंत में हॉलीवुड कैलिफोर्निया में आयोजित किया जाता है। यह वार्षिक फेस्टिवल और पुरस्कार प्रस्तुति विशेष रूप से डिजिटल शृंखला के लिए समर्पित है जिसने 2017 में अपना 6ठवाँ वार्षिक कार्यक्रम पूरा किया है।

० मेलबर्न वेब फेसीटवाल (Melbourne Web Festival):- इसने आस्ट्रेलिया में वेब सीरीज का पहला जश्न 20जुलाई 2013 में बनाया।

० सिकागो कॉमेडी फिल्म फेस्टिवल (Chicago Comedy Film Festival):- यह पहला पारंपरिक फिल्म फेस्टिवल है जो वेब सीरीज के लिए अलग से स्क्रीनिंग करता है और अवार्ड देता है। इसकी शुरुआत 2013 में हुई।

० लंदन वेब फ़ेस्ट (London Web Fest):- ब्रिटेन में पहली वेब उत्सव है जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल द्वारा आयोजित किया जाता है। 2013 में 28-29 सितंबर को पहली बार शुरुआत हुई थी।

० रोम वेब फेस्ट (Rome Web Fest):- इसकी शुरुआत 2013 रोम के इटली शहर में शुरू हुआ।

॰ रोम वेब अवार्ड्स (Rome Web Awards):-यह इटालियन वेब सीरीज ऑस्कर अवार्ड है।

॰ टोवेबफेस्ट (Towebfest):- टोरंटो में आयोजित किया जाता है जो वेब सीरीज का उत्सव मनाते है। ये वेब सीरीज समुदाय है जो द्वी-मासिक वेबसाइट मिलते है। यह आई. डब्लू. सी. सी. – सी. आई. डब्लू. सी. का घर भी है यहाँ कनाडा के स्वतंत्र वेब सीरीज क्रिएटर- क्रिएटर्स इंडिपेंडेंट्स दे सीरीज वेब डू कनाडा के लोग है जो इसका आयोजन करवाते है।

॰ बिलबाउ वेब फेस्ट (Bilbao Web Fest) :- यह वेब सीरीज प्रतियोगिता करता है जो इसके विभिन्न क्षेत्र में लोगों को पुरस्कृत करता है।

॰ मियामी वेब फेस्ट (Miami Web Fest):- यह दक्षिण फ्लोरिडा में मनाया जाता है। यह पूरे यूनाइटेड स्टेट, फ्लोरिड व संसार भर से वेब सीरीज को दिखाता है। द लेटिनो वेब फेस्ट भी इसी से संबंधित है जो हिस्पेनिक और लेटिन सामाग्री पर ज्यादा एकाग्रचित है।

॰अस्टिन वेब फेस्ट (Austin Web Fest):- यह टेकसास में आयोजित होता है जो मात्र वेब सीरीज को समर्पित है। 2013 में इसकी शुरुआत जो बरजस, मोनिक कंट्रेरास बरराज, डेविड एल कार्टर, रेन चावेज, एरिक रॉबिन, माइक स्कैनल और डैनी ट्रेवीनों द्वारा की गई थी। जून 2014 में ए. डब्लू. एफ. ने ओमनी ऑस्टिन होटल डाउनटाइन में आयोजित अपने पुरस्कार अमरोह के साथ अलामो ड्राफ्ट रिट्ज और द थैगआउट में स्क्रीनिंग के साथ इसके उदघाटन समारोह की मेजबानी थी।

॰एस एफ. वेब फेस्ट (SF Web Fest) जून 5-7, 2015 को सेन फ्रांसिस्को, केलिफोर्निया में इसकी शुरुआत हुई।

॰रियो वेब फेस्ट (Rio Web Fest):- रियो द जनेरियो ब्राज़ील का यह पहला वेब सीरीज है जो नवंबर 6-8, 2015 को शुरू हुआ।

॰ डी॰ सी॰ वेब फेस्ट (DC Web Fest):- 2013 में इसकी शुरुआत वाशिंगटन डीसी में हुई। यह ऑनलाइन फिल्म निर्माण में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करती है तथा गेमिंग और एप डेव्लपमेंट जैसे नए डिजिटल मीडिया को भी हाइलाइट करता है।

॰वेबफेस्ट बर्लिन (WebFest Berlin):- सितंबर 2015, जर्मनी में 'व्हाट्स नैक्सट' नाम से विश्व भर के वेब सीरीज़ दिखाने के लिए शुरू किया गया।

॰ यूट्यूब फैन फ़ेस्ट मुंबई(YouTube Fan Fest Mumbai):- 24 मार्च 2017 को 5000 भागीदारियों के साथ यह मुंबई में आयोजित किया गया।

1.2 भारतीय वेब सीरीज

भारत में वेब सीरीज की शुरुआत सर्वप्रथम TVF ने किया जो एक ऑनलाइन डिजिटल मनोरंजन चैनल है। 14 मार्च 2011को yotube पर चैनल बनाकर इसने अपनी शुरुआत स्पूफ़ विडियो से किया और 2014 में पहली बार permanent roommates नामक वेब सीरीज बनाया।

TVF (total viral fever)

संस्थापक - अरुनभ कुमार

वेबसाइट - tvfplay.com

एप्लीकेशन – tvfplay

सब्सक्राइबर्स – 2,956,634

व्यूज – 425,846,977

इसके कुछ अन्य चैनल्स भी हैं जो विभिन्न विषयों पर स्केचेर्स, स्टैंडअलोन जैसी सामग्री का निर्माण करती है।

The screen patti

सब्सक्राइबर्स – 797673

विडियो – 97

girliyapa

सब्सक्राइबर्स -747489

विडियो - 42

परमानेंट रूममेट्स

जॉनर - कॉमेडी,रोमांस

लेखक-विश्वपती सकरार, निधी बिस्ट

निर्देशक - समीर सक्सेना (सीजन-1) और दीपक कुमार मिश्रा (सीरीज-2)

मुख्य पात्र - निधी सिंह, सुमित व्यास

सिजन की संख्या - 2

एपिसोड - 10

समय - 56 मिनट

रिलीज - 29 अक्तूबर 2014 प्रथम, 27 फरवरी 2016 द्वीतीय

लॉन्ग डिस्टेंस रिलेशनशिप पर आधारित यह दो लोगों की कहानी है जो लंबे समय से एक दूसरेको प्यार कर रहे होते हैं। फिर एक दिन अचानक मिकेश (सुमित व्यास) अमेरिका से भारत आकार तान्या (निधी सिंह) से अपने प्यार का इजहार (प्रपोज) करता है और उससे शादी करने को कहता है। ऐसे में तान्या

अपने रूममेट की सलाह और मिकेश से विवाह करने की अपनी अनिच्छा के द्वंद में फंस जाती है। दोनों अंतत: एक समझौते के साथ अपने-अपने करियर को लेकर आगे बढ़ते है और इसी उधेर बुन में तान्या गर्भधारण भी कर लेती है और फिर शादी की योजना बनती है।[5] इसके दूसरे सिजन में इन्हीं के दामपत्य जीवन और उनसे जुड़े अन्य पहलुओं को दर्शाया गया है।

कहानी की बुनावट व अभिनेताओं के दमदार अभिनय ने इसे और भी रोमांचक बना दिया है। शायद यही वजह है की विश्व भर में एक बार में यह दूसरे सबसे ज्यादा देखों जाने वाला वेब श्रृंखला बन गया।

इसके दोनों सीरीज के सफलता को देखते हुए टी.वी. एफ. ने इसकी अगली कड़ी सीरीज 3 को 2018 में लाने का घोषणा किया है।

[5] https://en.wikipedia.org/wiki/Permanent_Roommates

टी. वी. एफ. पिचर्स

जॉनर - कॉमेडी, ड्रामा

क्रिएटर - अरुनभ कुमार

लेखक - विश्वपति सरकार,अरुनभ कुमार

निर्देशक -अमित गुलानि

पात्र - नवीन कस्तूरीय, अरुनभ कुमार जितेंद्र कुमार अभय महाजन

सिनेमोटोग्राफर / संगीत - वैभव बंधू

एपिसोड - 5

समय - 45.23 मिनट

संपादक - प्रशांत माछर

रिलीज – 9 जून 2015

इसे सर्वप्रथम 3 जून 2015 को टी. वी. एफ. के कंटेन्ट पोर्टल टी. वी. एफ. के कंटेन्ट पोर्टल टी. वी. एफ. प्ले पर प्रदर्शित किया गया फिर एक सप्ताह बाद 10जून 2015 को इसे यूट्यूब पर प्रदर्शित किया गया।

चार दोस्तों की कहानी सौरभ (सौरभ मण्डल), नवीन (नवीन बंसल), जीतु (जितेंद्र माहेश्वरी), योगी (योगेन्द्र कुमार) जिनमें सभी अपने नौकरी छोड़कर अपनी खुद की कंपनी शुरू करना चाहते हैं। यह आज के युवाओं की सच्चाई को दर्शाता हैं जहां हर कोई मजबूस अपनी इच्छा के विरुद्ध काम कर रहा है, और किसी न किसी कारण वश वह अपने पेशे में बॉस की डांट, कम मेहनताना, काम का बोझ इत्यादि लिए घूमता रहता है। एसे में नवीन (नवीन बंसल) कंपनी द्वारा किसी प्रोजेक्ट के ना मिलने से नाराज हो जाता है और फिर नशे में आकर इस्तीफा दे देता है। इसी समय वह नैसकॉम (Nasscom)स्टार्ट-अप सम्मेलन द्वारा अपने "बी प्लान" की खबर प्राप्त करता है। यहीं वो चार लोग मिलते है। जिन्हें पता चलता हैं की वह वास्तव में जीवन में क्या चाहते हैं और अपना स्टार्ट-अप पर विचार करने में चुनौतियों का सामना करते हैं।

इसके ट्रेलर जारी होने के बाद शो की तुलना अमेरिकी टीवी शो सिलिकॉन वैली से की गई थी। हालांकि जब पायलट का प्रिमियर हुआ तो यह अटकले निराधार साबित हुई, टी. वी. एफ. के संस्थापक और सीईओ अरुणभ कुमार ने द हफिंगट को दिये पोस्ट में इसे अमेरिकी टीवी शो से प्रेरित बताया लेकिन वह इसकी सामग्री में में नहीं बल्कि आत्मा से।

इसकी सफलता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकते हैं कि इसके पहले एपिसोड के 4.6 मिलियन से अधिक दर्शक है। आई एम डी बी पर 35007 उपयोगकर्ताओ द्वारा टी॰बी॰एफ॰ पिचर्स को 10 में 9.4 रेटिंग्स की है।

इसके अन्य वेब सीरीज कुछ इस प्रकार है :

चाय सुट्टा क्रोनिकल्स

ट्रिपलिंग - 9सितम्बर 2016

बिष्ट - 9अप्रेल 2017

इनमेट्स - 13अक्टूबर 2017

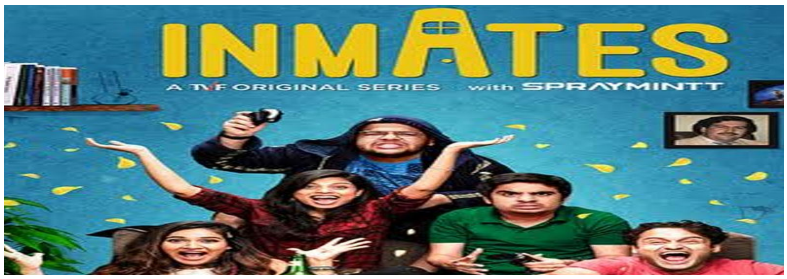

बैचलर्स - 15जून 2016

baked

क्रिएटर – विश्वजाय मुखर्जी, आकाश मेहता

सिनेमाटोग्राफी - राजू विश्वास

संपादक - श्वेता राय

साउंड - साहित्य ढींगरा

कला निर्देशक - अदिति वीना

निर्देशक - विश्वजाय मुखर्जी

पात्र - शांतनु अनम, प्रणय मनचंदा, माणिक पापनेजा, कृति विज

एपिसोड - 7, सीज़न -1

एपिसोड - 8, सीज़न -2

समय – 21–26 मिनट

निर्माता - पेचकस पिकचर्स, स्कूप-हूप टाल्कीज

तीन दोस्तों की कहानी है जो एक ही कमरे में फ्लेट-मेट की तरह रहते है। दिल्ली विश्वविद्द्यलय में पढ़ते हुए ये रात को फ़ूड डिलीवरी सर्विस शुरू करने की सोचते है। जिसका नाम baked रखते हैं, यहीं से कहानी शुरू होती है।[6] हारिस जो इलाहाबाद से दिल्ली विश्वविद्यालय पढ़ने आता है ना चाहते हुए भी रात को खाने की तलाश में दोस्तों के साथ दिल्ली की सड़कों पर निकाल पड़ा है और फिर वह परेशानियों में पड़ता जाता है। इन्हीं सबसे से इन्हें ये बिजनेस का आइडिया आता है और बेकेड सर्विस शुरू हो जाता है। फिर धीरे-धीरे लोगों की मोल -भाव से परेशान हो जाता है।

कहानी इतनी शानदार तरीके से काही गई है जो अमूमन हर छात्र अपने जीवन में इससे जुड़ा हुआ पाता है यही वजह है कि इसके हर एपिसोड को 3 मिलियन से ज्यादा लोगों ने देखा है।

[6] www.imdb.com/title/tt4775018/

योलो (Yolo) - यू ओन्ली लिव वंस

निर्देशक – समीर विध्दान्स

स्क्रीन प्ले / संवाद – अंबर हड़प, गणोश पंडित

निर्माता – श्रीरंग गोडबोले (इंडियन मैजिक आई प्राइवेट लिमिटेड)

पात्र – शिवराज वैकाल, शिवानी रंगोले, रुतराज शिंदे, शशवती पिंपलकर, साई तांहणकर, नागेश भोसले, आनंद इंगले

सीजन – 1

एपिसोड – 10

समय – 13 मिनट

रिलिज – 11जनवरी 2017

मराठी भाषा में बनी यह वेब सीरीज चार युवा वयस्कों के आने वाले युग की कहानी के आसपास केन्द्रित है – " चोको उर्फ़ शिवराज वैकाल, सारिका उर्फ शिवानी रंगोले, रोचक उर्फ रुतराज शिंदे और पारी उर्फ

शशवती पिंपलकर ।मराठी मनोरंजन जगत के अन्य प्रसिध्द चेहरे में साई तांहणकर, नागेश भोसले और आनंद इंगले हैं।"

जो अप्रत्याशित रूप से कई नाटकीय घटनाओं के माध्यम से आम तौर पर प्यार,रिश्ते, सेक्स और जीवन पर उनके परिप्रेक्ष्य को बदल देती है। इसमें नैतिकता और नैतिकता की अवधारणाओं पर दो पीढ़ियों के बीच मतभेद दिखाई देता है। कहानी शुरू होती है जब चोको के परिवार के सदस्य एक हपत्ते के लिए दूर जाते हैं। यहाँ फिर एक घटना होती है जिसमें बहुत सारी नाटकीयता हैं। यहाँ उनका अपना खुद से परे एक सोच विकसित होता है और फिर वो अपने माता–पिता को भी अलग नजरिए से देखना शुरू करते हैं। यहाँ बुजुर्गों के अनुभव और परिपक्व दृष्टिकोण को भी बड़े हीं अच्छे तरह से दर्शाया गया है।[7]

सोनी लीव ने बड़ी ही सजगता के साथ क्षेत्रीय भाषा में यह सीरीज़ बनाया है क्योंकि इंटरनेट उपयोगकर्ताओ की संख्या बढ़ती जा रही है तो ऐसे में इनके लिए जरूरी हो जाता है कि व्यवसाय के नजरिये से भी यह एक नया बाजार प्रदान कर रहा है जिसका लाभ लेने के लिए यह एक बड़ा ही सार्थक कदम है।

[7] www.indiantelevision.com/.../sonyliv-launches-original-marathi-web-series-yolo-170.

धीमानेर दिंकल

जॉनर – कामेडी

निर्देशक-अनिंदय सरकार

निर्माता-अल्ट बालाजी

पात्र - सास्वता चटर्जी, श्रीलेखा मित्रा, खोराज मुखर्जी, सुदीप्त बनर्जी

एपिसोड-15

रिलिज- 30जुलाई 2017

यह एक साधारण व्यक्ति कि कहानी है जो टेक्नोलॉजी और इंटरनेट के पागलपन से सादगी का जीवन जीता है, इनके जीवन में अप्रत्याशित मोड लेता है जब इन्हें नई दुनिया की तकनीक को गले लगाने के लिए मजबूर किया जाता है। सास्वता चटर्जी जो कि धीमन कि मुख्य भूमिका कर रहे हैं वो अपनी पुरानी आदतों तक ही सीमित है। वह अभी भी मानते हैं कि इंटरनेट और आधुनिक तकनीक सिर्फ तीसरी दु निया के देशों में एक प्रहसन है।[8] धीमन एक विपरीत दुनिया में रहता है जहां उनकी पत्नी और बेटी के जीवन पर

[8] https://www.mymovierack.com/show/dhimaner-dinkaal

इंटरनेट का प्रभुत्व है लेकिन वह इन सबसे रहित खुले में सांस लेना पसंद करते हैं। ऐसे में एक साधारण व्यक्ति जब इस काल्पनिक दुनिया में प्रवेश करता है तो क्या वह अपने विवेक को बनाए रख पता है?

माया

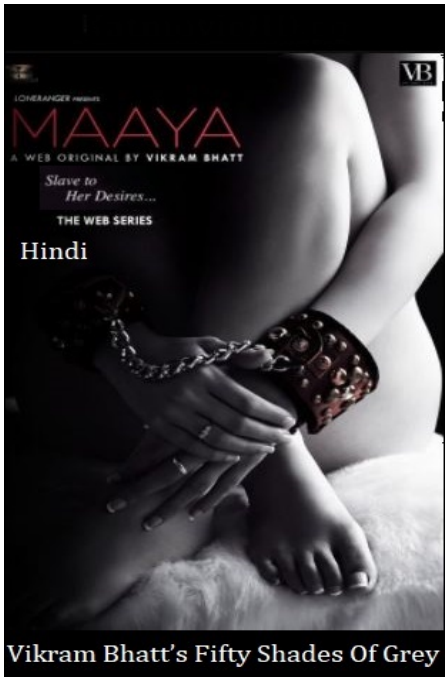

निर्देशक- विक्रम भट्ट

निर्माता- लॉन रेंजर प्रोडक्शन प्राइवेट लिमिटेड

पात्र- समा सिकंदर, विपुल गुप्ता, वीर आर्यन, चोपड़ा

अराध्या तायंग, फ़रीना एपिसोड- 10

समय- 30 मिनट

रिलिज- 27 जनवरी 2017,

संवाद - अनुपम संतोष सरोग

जॉनर- इराटिक प्रेम कथा

स्क्रीन प्ले - विक्रम भट्ट, तान्या पाठक

फिफ्टी शेड्स ऑफ ग्रे से प्रभावित होकर बोंडेज, डिसिप्लिन, डोमिनेंस व सबमिशन को बड़े हिन जोर शोर से विक्रम भट्ट ने वेब सीरीज के रूप में भारतीय दर्शन के लिए लाया है। भट्ट पहले इसे किताब के लिए लिख रहे थे, कुछ अध्याय लिखे भी फिर उन्हें एहसास हुआ कि इसे एक दृश्य माध्यम कि जरूरत है। वो कहते है कि यह बी.डी.एस.एम. के बारे में ज्यादा नहीं है बल्कि इंटरनेट कि दुनिया के बारे में है जहां एक गुमनामी है। हम खुद को एक उपयोगकर्तों का नाम देते हैं और अचानक खुद से मुक्त होते हैं।[9] "माया" उस विडंबना के बारे में है जहां अपने सच्चे आत्म होने के लिए हमे अनाम होना चाहिए और

[9] m.hindustantimes.com

इसी तरह कहानी शुरू होती है एक लड़की जो अपनी कल्पनाओं को पूरा करने के लिए इंटरनेट केइस वर्चुअल संसार में कदम रखती है और माया नाम से अपना प्रोफाइल बनाती है। ऐसे में उसकी मुलाक़ात राहुल से होती है जिसकी कल्पनायें भी कुछ ऐसी हीं है। दोनों अपनी अपनी शादी से नाखुश है फिर ऐसे में यह इंटेरनेट की दुनिया इन्हे आपस में मिलाती है यहाँ से दोनों एक दूसरे में अपने को देखते है और अपनी दमित इच्छाओं को पूरा करते हैं एक दिन राहुल मर्डर के केश में फंस जाता हैं और सोनिया को छोडकर चला जाता है। सोनिया उसकी तलाश में अपना मानसिक संतुलन खो बैठती है। धीरे धीरे ये बात इसके पति को पता चलता है। सोनिया को ठीक करने के लिए वह इस सच्चाई को जानते हुए भी उसकी सेवा करता है और अंत में सोनिया को राहुल के साथ जीवन व्यतीत करने को कहता है।

शायद अगर डिजिटल मधायम पर सेंसरशिप होता तो इसे रिलिज करने में बहुत अड़चने आती इसी वजह से विक्रम भट्ट ने इसे फिल्म के बजाय वेब के रूप में बनाना उचित समझा और सफल भी हुए।

1.3 प्रदर्शन की सीमाएँ

वेब सीरीज आज जिस तरह से रोज नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा उससे हम इतना तो अंदाजा लगा ही सकते हैं कि ये टेलीविजन के लिए चुनौती खड़ा करता जा रहा है। लेकिन इन सब के बावजूद इसकी कुछ सीमाएँ हैं क्योंकि यह माध्यम पूरी तरीके से इंटरनेट पर आश्रित है। हम अन्य माध्यम जैसे टेलिविजन को बिना इंटरनेट के भी चला सकते हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि आज भी इसका बड़ा दर्शन वर्ग मेंट्रोपोलेटिन शहरों में है। दूर-दराज के छोटे शहरों, गांवों तक यह अभी भी नहीं पहुँच पाया है।

इसके दर्शको में पंद्रह से पैंतीस वर्ष के युवा है लेकिन फिर भी एक बड़ा दर्शक वर्ग आज इससे वंचित है। प्रौढ़ वर्ग के दर्शकों के लिए आज भी कोई सामाग्री उपलब्ध नहीं है वह अभी भी अपने मनोरंजन कि सामाग्री तलाश रहा हैं। डिजिटल तकनीक जितना बड़ा और व्यापक होता जा रहा है। वही इसकी स्क्रीन दिन ब दिन छोटी होती जा रही है। यह हमारे लैपटॉप, मोबाइल इत्यादि के स्क्रीन पर उपलबध्य होता है जो कि हमारे इशारों पर काम करता हैं ।ऐसे में सिनेमा का जो अपना एक वातावरण होता है हम उससे वंचित रह जाते हैं। सिनेमा हॉल में बैठकर जब हम कुछ देख रहे होते हैं तो उसका पूरा वातावरण हमें सहयोग करता है फिर हम उस आनंद को प्राप्त करते हैं।

स्वास्थ्य : आज हम जिस माध्यम से इसे देख रहें हैं वो पूरा का पूरा अदृश्य रेडियो तरंग से घिराहुआ है।

मेडिकल कॉलेज ऑफ विस्कॉन्सिन में विकिरण अंकोलौजी के प्रोफेसर एमेरिटस जान कहते है।'वायरलेस उपकरणों की मात्रा और सर्वव्यापीता एक नई घटना है, लेकिन वे दशकों तक वैज्ञानिक जांच का विषय है'। 2013 में मोल्डर ने वाई-फाई पर मौजूद स्वास्थ्य समीक्षा की। मोबाइल फोन की तरह वाई-फाई राउटर रेडियो तरंगों का उपयोग करते हुए सूचना प्राप्त करते हैं, जो विद्धुतचुंबकीय विकिरण का एक रूप है। इनका शोध के आधार पर कहना है कि उच्च आवृतियों पर विद्धुत चुंबकीय विकिरण ट्यूमर कि

वृद्धि और क़ैसर को बढ़ावा दे सकता है। यहाँ तक कि कम आवृतियों पर विद्धुत चुंबकीय विकिरण जोखिम के बहुत उच्च स्तर पर नुकसान पहुंचा सकते है। फोस्टर जो कि मोल्डर के सहलेखक थे जिन्होने 2013 कि वाई-फाई के स्वास्थ्य प्रभावों कि समीक्षा थी। उनका कहना है कि जब हम वायरलेस राउटर के माध्यम से किसी को संदेश भेजते हैं तो यह उपकरण मात्र 0.1% समय लेता है यदि वीडियो स्ट्रीम कर रहें तो यह समय शायद कुछ ऊपर भी जा सकता है लेकिन ज़्यादातर वक्त यह राउटर तरंगे कुछ घटने का इंतजार कर रहा है। यह तरंगे हमारे चारों तरफ हर इंच पर फैला होता है, जो हमारे शरीर के विकिरण कि शक्ति को काफी कम कर देता है। मोस्कोवेट्ट्स ने अपने शोध में कहा है इससे कई तरह कि गंभीर बीमारियाँ होने का खतरा रहता है।[10] जैसे- न्यूरोड़ेफ्लेमेंटल मुद्दों, कैंसर और प्रजनन संबंधी समस्या। यह विशेषकर गर्भवती महिलाएं और बच्चे के लिए तथा पुरुषों व महिलाओं के लिए भी खतरनाक है।

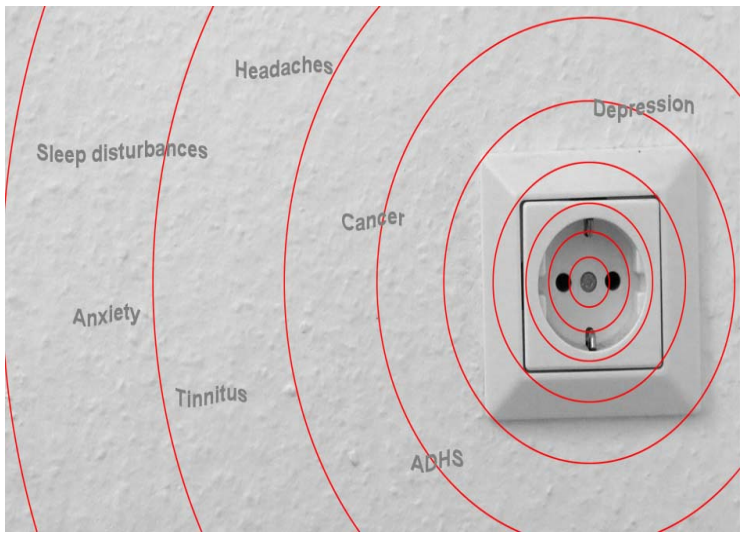

ये कहते हैं कि रेडियो तरंग विकिरण की मात्रा बच्चों के संपर्क में ज्यादा है और यह चिंता का विषय है। बेशक आज आधुनिक समाज में रहते हैं तो रेडियो तरंग एक्सपोजर से बचने की कोशिश करना कम या

1 timein.net

असंभव है लेकिन फिर भी हमे यही कोशिश करनी चाहिए की अपने से वायरलेस उपकरण को दूर रखे क्योंकि आज 'हम मूल रूप से अंधे दौड़ रहें हैं'।

वीडियो शेयरिंग वेबसाइट पर निर्भरता – यह एक ऐसा स्थान है जहां उपयोगकर्ताओं को अपने वीडियो क्लिप वितरित करने की अनुमति देती है अन्य प्रकार के वेबसाइट जैसे कि फाइल होस्टिंग, छवि होस्टिंग और सोशल नेटवर्क सेवाएं उपलब्ध कराने वाली भी वीडियो शेयरिंग का समर्थन कर सकती हैं कई वेबसाइट ऐसे हैं जो निजी साझाकरण और अन्य प्रकाशन विकल्प के लिए विकल्प देते हैं वीडियो शेयरिंग सेवाओं को कई श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है जैसे- उपयोगकर्ता द्वारा निर्मित वीडियो शेयरिंग प्लेटफार्म, वेब- आधारित वीडियो संपादन इत्यादि ऐसी वेबसाइट जो पूरी तरह से "सर्च इंजन" है और अपनी वीडियो सामग्री (जैसे कि सिंगिगफिश) को होस्ट नहीं करते हैं वह कुछ सेवा शुल्क ले सकता है लेकिन ज्यादातर मुफ्त में उपलब्ध है कुछ वेबसाइट व्यवसायीकरण सुविधाएं प्रदान करतीहैं जिसमें कि वह उपयोग करता द्वारा डाले गए वीडियो पर प्रति-दृश्य भुगतान करते हैं और यही व्यवसायीकरण सुविधा प्रदान करने वाली वेबसाइट पर वेब सीरीज आश्रित है जो कि इसकी सीमाएं हैं अगर यह वेबसाईट नहीं होगा तो वेब सीरीज को अपना नया प्लेटफार्म ढूंढना पड़ेगा भारत में सबसे लोकप्रिय youtube है जो वेब सीरीज का एक बड़ा प्लेटफार्म है। वैसे पिछले कुछ दिनों में netflix और amazon prime video जैसी वीडियो शेयरिंग वेबसाइट भी अपना स्थान बनाने में कामयाब हो पाया है।

शोध-सारांश

वेब सीरीज सिनेमा का ऐसा माध्यम है जिसकी शुरुआत स्पूफ वीडियो से हुई। इसके आधार में इंटरनेट है जहाँ इसे रिलीज किया जाता है। दुनिया का पहला वेब सीरीज 1995 में बना और भारत में 2014 में। इंटरनेट के प्रसार के साथ ही वेब सीरीज की लोकप्रियता लगातार बढ़ती जा रही है। आसानी से उपलब्धता, सेंसर का अंकुश नही होने से किसी भी कहानी को रचनात्मकता के साथ-साथ मूलरूप में दिखा सकने की क्षमता और एक फिक्शन फ़िल्म की अपेक्षा कम लागत लगना। आज हर छोटे-छोटे निर्माताओं से लेकर बड़े निर्माता, निर्देशक तक वेब सीरीज का निर्माण कर रहें हैं। बदलते जीवन परिदृश्य में इसकी उपयोगिता लगातार बढ़ती जा रही है। इंटरनेट पे घंटो समय व्यतीत करने वाली पीढ़ी के लिए सोचकर सिनेमाहॉल में जाने का बेहतर विकल्प वेब सीरीज उपलब्ध कराता है। स्मार्टफोन उपयोगकर्ता के लिए वेब सीरीज हमेशा हाथ में ही होता है। इंटरनेट पर ऐसे कई वेबसाइट है जिस पर वेब सीरीज आसानी से उपलब्ध है। जैसे – यूट्यूब, नेटफ्लिक्स, अमेज़न प्राइम वीडियो इत्यादि। इन वेबसाइट में से कुछ मुफ़्त में उपलब्ध हैं तो कुछ के लिए सब्सक्रिप्शन आवश्यक है। निर्माता इन्ही वेबसाइट की मदद से अपने वीडियो के ऊपर आये सब्सक्राइबर्स, ट्रैफिक और व्यूज के आधार पर पैसे कमाते हैं। संचार माध्यम के रूप में स्थापित हो रहा वेब सीरीज मीडिया के अन्य प्रकारों को ज़ोरदार टक्कर दे रहा है। टेलीविज़न के लिए यह बड़ी चुनौती है। अपने कंटेंट में आज भी घिसे-पिटे सास-बहु और नागिन जैसे सीरियल को आधार बनाकर आगे बढ़ने की प्रक्रिया में टेलीविज़न अपने दर्शकों को बांधने में असफ़ल प्रतीत होता है। बदलते दौर में इंटरनेट ने स्मार्टफ़ोन, लैपटॉप, टैब पर समय-सीमा और काल के बंधन को तोड़कर यह आज़ादी दिया है कि दर्शक जब चाहे अपने पसंद का कार्यक्रम देख सकता है। वही टेलीविज़न दर्शकों को यह आज़ादी मुहैया नही करा पा रहा है। इधर इंटरनेट के विकास के साथ ही हम डिजिटल होते जा रहे हैं। फ़िल्म रिलीजिंग का तरीका बदल गया है। अब फ़िल्में केवल सिनेमाघरों पर आश्रित नही रहता। इंटरनेट के हस्तक्षेप ने इसे नया आयाम दिया है ऐसे में हम उम्मीद कर सकते हैं कि भविष्य में और अच्छे वेब सीरीज देखने को मिलेंगे। आज ना केवल मनोरंजन की दृष्टि से बल्कि गंभीर मुद्दों पर भी वेब सीरीज बन रहे हैं। इस तरह भविष्य में इसके विस्तार को नकारा नहीं जा सकता है।

web series is a medium of cinema that is started through spoof videos. Internet is the basic of web series where it is being released. World's first web series was made in 1995 and in India, it was firstly made in 2014. Popularity of web series is increasing continuously together with the spread of internet. Easily availability, capicity to show the main form of a story together with its creativity and less expense on these in comparision to a fiction movie. Today, all low and high budget's directors and producers are producing web series. Uitility of this web series is increasing in this changing life's senario. Web series is a latter option for generations spending hours on internet. They are not at all interested to go to cinema halls just for a movie. Web series is always in the hands of smart phone users. There are various websites on internet. For example – YouTube, Amazon Primes, Netflix etc. Among these websites, some of them are free of cost available while for some of websites we have to be member. Producers earn money through the help of subscribers, traffics and ads which flashes over these videos. Web series is strongly competating with the other mediums of media . It is a big challenge for television. Now a day, television is not successful in bounding its viewers in its so called Saas-Bahu serials, Nagin etc. Internet has provided us freedom to view anything according to our taste without any time limitation, while television is unable to facilitate us all this. We are getting digital with the development of internet. Process of film releasing has changed. Now films are not only responsible on Cinema Halls. Interfarence of internet has provided a new aspect to movies. We can expect better web series in future. Apart from entertainment , web series are also available on serious issues. We can not denie with the extension of the web series in future.